पक्षी दर्शन

के. आर. शर्मा

पक्षियों की ओर आकृष्ट होना मानव की एक स्वाभाविक आदत है। आखिर हो भी क्यों ना। सुन्दर रंग-रूप, आकर्षक उड़ान, मधुर आवाज़ और भी जाने कितने आकर्षण हैं इनमें। पुरातन काल से ही पक्षियों से मनुष्य का गहरा सम्बंध रहा है। ठण्ड, गर्मी हो या कि हो बरसात, पक्षी हमेशा ही देखे जा सकते हैं। पक्षियों ने जहां इस प्रकृति को सुन्दर बनाया है, वहीं इस प्रकृति को संतुलित बनाए रखने में भी अहम भूमिका निभाई है।

भारतीय उपमहाद्वीप में ऐसे एक भी वर्ग मील क्षेत्र की कल्पना नहीं की जा सकती जहां चिड़ियां न हों। महानगर, घने जंगल, पानी के स्रोत, तपते रेगिस्तान, बर्फीले पहाड़ों पर हर जगह चिड़ियों के बसेरे मिल जाएंगे। हां इतना ज़रूर है कि अधिक विषम परिस्थितियों में इनकी संख्या बहुत कम होती है। वे कुछ विशिष्ट स्थानों तक ही सीमित रहती हैं, क्योंकि ऐसी जगहों में भोजन सीमित होता है।

क्या आप भी पक्षियों से दोस्ती करना चाहेंगे? आम तौर पर समझा जाता है कि पक्षियों के अवलोकन के लिए विज्ञान की डिग्री होना ज़रूरी है। ऐसा समझना ठीक नहीं है। किसी व्यवस्थित ढंग से चिड़ियों का निरीक्षण न करते हुए भी आम तौर पर लोग विशिष्ट चिड़ियों को आसानी से पहचान लेते हैं। मसलन दूधराज को अगर कोई पहली बार देखे तो उसकी दुम के रंग-बिरंगे फीतों से प्रभावित हुए बगैर रहना मुश्किल है। हालांकि वह व्यक्ति उस चिड़िया का सही-सही व पूरा वर्णन न भी दे पाए लेकिन अगली बार उस चिड़िया को देखते ही वह उसे पहचान लेगा। कुशल पक्षी दर्शन द्वारा थोड़े ही समय में व्यक्ति इतना प्रशिक्षित हो जाता है कि झाड़ी में फुदकती चिड़िया की एक झलक पाकर ही उसके किसी विशिष्ट लक्षण, रूप-रंग तथा दुम की आकृति से उसको सही-सही पहचानने में काफी हद तक सफल हो जाता है।

प्राकृतिक परिस्थितियों में पक्षियों का अवलोकन कर उनके बारे में बहुत कुछ सीखा जा सकता है। पक्षी दर्शन यानी बर्ड वॉचिंग को एक शौक के रूप में आसानी से विकसित किया जा सकता है। बर्ड वॉचिंग के द्वारा प्रकृति के अन्य पहलुओं, मौसमी बदलावों आदि के बारे में भी जानने का मौका मिलता है।

बर्ड वॉचिंग कहां

बर्ड वाचिंग के लिए आपको अलग से समय निकालने की ज़रूरत नहीं। आप अन्य काम करते हुए भी पक्षियों से जान-पहचान कर सकते हैं। यदि आप रेल या बस से सफर कर रहे हैं और खिड़की वाली सीट मिल जाए तो आपको पक्षी दिखाई पड़ेंगे; सुबह-शाम टहलने के दौरान; जंगल या किसी पहाड़ी स्थान पर घूमते वक्त भी पक्षियों का अवलोकन किया जा सकता है।

बर्ड वॉचिंग कब

वैसे तो चिड़ियों को दिन भर उड़ते देखा जा सकता है लेकिन इनका सबसे ज़्यादा सक्रिय समय सुबह का होता है। इनकी आवाज़ सुनने, पहचानने और इन्हें देखने के लिहाज़ से सबसे उचित समय भोर की बेला है।

सामान्य धारणा के विपरीत, अनुभवहीन व्यक्तियों द्वारा पक्षी दर्शन के लिए जंगल अधिक उपयुक्त स्थान नहीं है। सम्भव है वहां मीलों चलने पर भी आपको चिड़ियां न मिलें और आप ज्यों ही मुड़ें तो ढेर सारी चिड़ियों का झुण्ड सहसा आपके स्वागत में चहचहाता मिल जाए। हमारे देश के पहाड़ी और मैदानी जंगलों में मिली-जुली चिड़ियों के इस तरह के झुण्ड (मिश्रित आखेट टोलियों) का दिखना सामान्य बात है। इस तरह मिल-जुलकर रहने से सभी पक्षी लाभ उठाते हैं जैसे पत्रिंगा चिड़ियां गिरी हुई पत्तियों के नीचे कीड़ों की खोज करती हैं। हिलने-डुलने से पत्तियों पर बैठे पतंगे उड़ते हैं। जिन्हें भुजंगा हवा में ही झपट लेता है।

जब बरगद और पीपल के पेड़ों पर लगे फल पकने लगते हैं तो कई जातियों की चिड़ियों के झुण्ड के झुण्ड

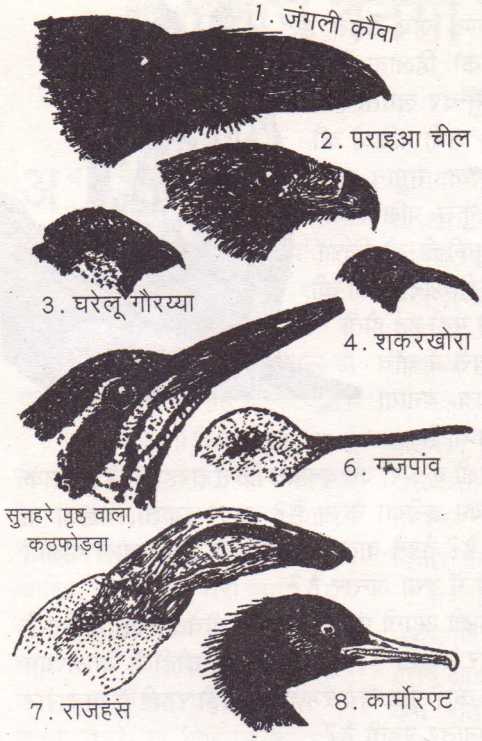

किस्म - किस्म के चोंच

1. काटने वाली
2. मांस को चीरने-फाड़ने वाली
3. बीजों को दबाकर तोड़ने वाली
4. फूलों के अन्दर छानबीन करने वाली
5. लकड़ी में छेद करने वाली
6. दलदल में छानबीन करने वाली
7. दलदल या कीचड़ छानने की छलनी जैसी
8. मछली पकड़ने के लिए आरी जैसे दांत वाली

किस्म-किस्म के पंजे

1. पक्षिसादी
2. शिकार पकड़ने वाले
3. ऊपर चढ़ने वाले
4. दौड़ने वाले
5. पकड़ने वाले
6. पत्तियों पर चलने वाले
7. तैरने वाले
8. तैरने वाले
9. तैरने वाले

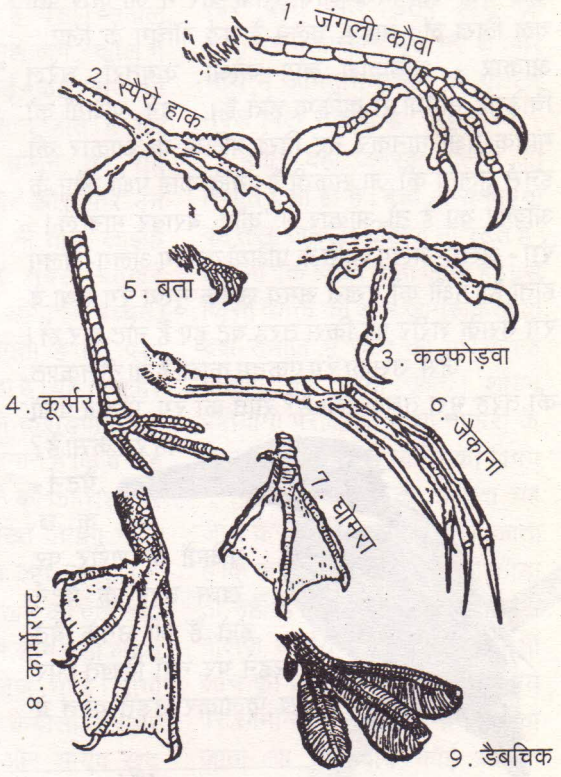

दूर-दूर से आकर यहां इकट्ठा होने लगते हैं। पक्षी अवलोकन की दृष्टि से यह बहुत अच्छा समय होता है।

चिड़ियों को देखने का एक और उपयुक्त अवसर तब आता है जब पहली वर्षा की कुछ बूंदें गिरती हैं। इस समय पंखवाली दीमक काफी संख्या में अपने भूमिगत आवासों से मैथुन उड़ान के लिए बाहर निकलती हैं। दीमक का बाहर निकलना चिड़ियों के लिए चुम्बक का काम करता है और चिड़िया अपने आपसी मतभेद भुलाकर उस तरफ झपटती हैं। हवा तथा ज़मीन पर दीमकों का पीछा करते हुए वे उनको सफाचट करती जाती हैं।

कैसे करें पक्षी अवलोकन?

पक्षियों को देखना, पहचानना तथा उनका अवलोकन अपने आप में बहुत ही दिलचस्प प्रक्रिया है। पक्षियों का आकार, रंग-रूप, आदत, भोजन, प्रवास आदि के बारे में जानना अपने आप में एक रोचक काम है। बर्ड वॉचिंग हेतु एक अलग से डायरी बनाई जा सकती है। आपको कोई नया पक्षी दिखे और उसके बारे में जो कुछ पता चले लिख लें। आइए, चलते हैं बर्ड वॉचिंग के लिए:

आकार - अधिकांश लोग कौओं, कबूतरों, घरेलू चिड़ियों, मुर्गियों से वाकिफ होते हैं। इन पक्षियों को मानक पक्षी मानकर नए दिखे पक्षियों के आकार की इनसे तुलना की जा सकती है। यदि कोई पक्षी कौए के आकार का है तो आकार में 'कौए' बराबर मान लें।

रंग - अलग-अलग जाति के पक्षियों का रंग अलग-अलग होता है। पक्षी को देखते समय उसके मुख्य रंग तथा वे रंग उसके शरीर पर किस तरह बंटे हुए हैं नोट कर लें। जैसे उसका रंग एकदम काला है या नीलकण्ठ की तरह भूरा तथा नीला है? सीने का रंग, पीठ व पंखों का रंग कैसा है?

पैटर्न - कुछ पक्षियों के शरीर पर खास तरह के पैटर्न होते हैं जो उनके बैठे रहने पर नहीं दिखते। पर पंख फैलाकर उड़ते वक्त वे बड़े ही गज़ब दिखते हैं। नीलकण्ठ जब उड़ते हुए पंखों को हिलाता है तो बेहद सुन्दर लगता है।

चोंच - सभी पक्षियों की चोंच एक समान नहीं होती। कुछ पक्षियों की चोंच नुकीली तो किसी की लम्बी और किसी की आगे से मुड़ी हुई होती है। डायरी में चोंच का चित्र बनाया जा सकता है।

पैर - पक्षी के पैरों की बनावट किस तरह की है? उसके चलने का तरीका कैसा है? वह फुदकता, चलता या दौड़ता है? तैरने वाले और पेड़ पर बैठने वाले पक्षियों के पंजों में क्या अन्तर है?

पूंछ - पक्षी अपनी पूंछ को ऊपर-नीचे हिलाता रहता है या स्थिर रखता है? पूंछ लम्बी है, छोटी है या मध्यम आकार की? पूंछ नीचे रहती है, खड़ी रहती है या शरीर के समानांतर रहती है?

आवाज़ - आवाज़ से पक्षी को पहचाना जा सकता है। हो सकता है किसी ने कोयल देखी न हो किन्तु उसकी आवाज़ ज़रूर सुनी होगी। साथियों को बताने के लिए पक्षी की आवाज़ की नकल सीखी जा सकती है।

आवास - अधिकांश पक्षी उड़ते हैं, लेकिन हर पक्षी हर स्थान पर नहीं रह सकता। कुछ पक्षी सूखी जलवायु पसंद करते हैं, तो कुछ घास के मैदान, तो कुछ पानी के किनारे की दलदल।

इसके अलावा भी पक्षियों के अन्य व्यवहारों के बारे में पता किया जा सकता है जैसे कुछ पक्षी शांत होते हैं तो कुछ वाचाल। कुछ हमसे डरते नहीं, तो कुछ ज़रा सी आहट पाकर छिप जाते हैं।

इस तरह पक्षियों के बारे में आपकी जानकारी इकट्ठी होती जाएगी। लेकिन किसी भी पक्षी के बारे में एक साथ इतनी सारी जानकारी नहीं मिल पाएगी। यानी पक्षी अवलोकन एक सतत प्रक्रिया है। ***(स्रोत फीचर्स)***

के. आर. शर्मा : एकलव्य के उज्जैन केन्द्र में काम करते हैं और होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम से संबद्ध हैं।